
sadAshivAShTakam

सदाशिवाष्टकम् श्रीशिवपञ्चयामरस्तोत्रं च

Document Information

Text title : sadAshivAShTakam

File name : sadashiva8.itx

Category : aShTaka, shiva

Location : doc_shiva

Author : patanjalikRitam sadAshivAShTakam

Transliterated by : N.Balasubramanian bbalu at satyam.net.in

Proofread by : N.Balasubramanian bbalu at satyam.net.in

Description-comments : haAsyamAhAtmye. Also known as Shri Sabhapati Stotram on Deity
velliambala sabhApati, Madurai

Latest update : July 2, 2008

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 15, 2019

sanskritdocuments.org

सदाशिवाष्टकम् श्रीशिवपञ्चयामरस्तोत्रं य



श्रीसभापति स्तोत्रं य

पतञ्जलिरुवाच -

सुवर्णपद्मिनी-तटान्त-दिव्यदर्भ्य-वासिने
सुवर्णवाहन-प्रियाय सूर्यकोटि-तेजसे ।
अपर्णया विहारिणे कृपाधरेन्द्र-धारिणे
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥ १ ॥

सतुङ्ग भङ्ग जङ्गुजा सुधांशु षाण्ड मौणये
पतङ्गपङ्कजासुदृढपीटयोनिचक्षुषे ।
भुङ्गराज-मण्डलाय पुण्यशालि-बन्धवे
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥ २ ॥

यतुर्भुजाननारविन्द-वेदगीत-भूतये
यतुर्भुजानुजा-शरीर-शोभमान-मूर्तये ।
यतुर्विधार्थ-दान-शौण्ड ताण्डव-स्वरुपिणे
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥ ३ ॥

शरन्नशाकर प्रकाश मन्दलास मञ्जुला
धरप्रवाण भासमान वङ्गमण्डल श्रिये ।
करस्फुरत्कपालमुक्तरक्त-विष्णुपालिने
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥ ४ ॥

सहस्र पुण्डरीक पूजनैक शून्यदर्शनात्-
सहस्रनेत्र कल्पितार्यनाय्युताय भक्तिः ।
सहस्रभानुमण्डल-प्रकाश-यङ्गदायिने
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥ ५ ॥

रसारथाय रम्यपत्र भृङ्गयाङ्गपाणये
रसाधरेन्द्र थापशिञ्जिनीकृतानिलाशिने ।

स्वसारथी-कृताञ्जनुन्नवेदरूपवाजिने
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥ ६ ॥

अति प्रगल्भ वीरभद्र-सिंहनाद गर्जित
श्रुतिप्रभीत दक्षयाग भोगिनाक सन्ननाम् ।
गतिप्रदाय गर्जितापिल-प्रपञ्चसाक्षिणे
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥ ७ ॥

मृकण्डसूनु रक्षाणावधूतदण्ड-पाणये
सुगन्धमण्डल स्फुरत्प्रभाजितामृतांशवे ।
अम्भण्डभोग-सम्पर्धलोक-भावितात्मने
सदा नमश्शिवाय ते सदाशिवाय शंभवे ॥ ८ ॥

मधुरिपु-विधि शङ्क मुष्य-देवैरपि नियमार्थित-पादपङ्कजाय ।
कनकगिरि-शरासनाय तुभ्यं रजत सभापतये नमश्शिवाय ॥ ९ ॥

डालास्यनाथाय मधेश्वराय डालालालंकृत कन्धराय ।
मीनेक्षायाः पतये शिवाय नमो-नमस्सुन्दर-ताण्डवाय ॥ १० ॥

॥ इति श्री डालास्यमाडालास्ये पतञ्जलिकृतमिदं सदाशिवाष्टकम् ॥

Also known as Shri Sabhapati Stotram on Deity veLLiambala sabhApati, Madurai

Encoded and proofread by

N. Balasubramanian bbalu at satyam.net.in



sadAshivAShTakam

pdf was typeset on December 15, 2019



Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

